>

Title: Need to establish a Central Tribal University in Banswara district, Rajasthan-laid.

श्री कनकमल कटारा (बांसवाड़ा): मैं अपने संसदीय निर्वाचन क्षेत्र के अंतर्गत बांसवाड़ा-डूंगरपुर (राजस्थान) के अनुसूचित जनजाति क्षेत्र (टी.एस.पी.) में केन्द्रीय जनजातीय विश्वविद्यालय की स्थापना की ओर ध्यान आकर्षित करना चाहता हूं । स्वाधीनता सात दशक बीत जाने पर भी जनजाति बाहुल्य ऐसे भौगोलिक परिक्षेत्र हैं, जिन्हें उच्च शिक्षा, अनुसंधान एवं शोध के अवसर उपलब्ध करावाने वाले संसाधन नगण्य हैं । राजस्थान के दक्षिणांचल में स्थित जनजाति परिक्षेत्र राजस्थान, मध्य प्रदेश व गुजरात तीनों ही राज्यों से आपस में जुड़ा हुआ है । इस सम्पूर्ण जनजातीय परक्षित्र में राजस्थान के सात, गुजरात के पांच एवं मध्य प्रदेश के पांच जिलों की आबादी उच्च शिक्षा एवं अनुसंधान की दृष्टि से उपेक्षित है । राजस्थान राज्य के दक्षिणी भाग में जनजातियों का बाहुल्य है । जनगणना 2011 के अनुसार अनुसूचित जनजाति क्षेत्र में कुल आबादी में से लगभग 74 प्रतिशत आबादी जनजातियों की है । जनजातियों की सांस्कृतिक परम्परा, भाषा, साहित्य कला, विधियां और इतिहास विशिष्ट है, जिनका अध्ययन आजादी के बाद से उपेक्षित रहा है ।

अनुसूचित जनजाति क्षेत्र में बांसवाड़ा जिला भौगौलिक दृष्टि से केन्द्रीय स्थान पर है । वर्तमान में राजस्थान सरकार द्वारा स्थापित गोविन्द गुरू जनजातीय विश्वविद्यालय बांसवाड़ा में संचालित है, जिसमें बांसवाड़ा, डूंगरपुर एवं प्रतापगढ़ जिलों के राजकीय एवं निजी 118 महाविद्यालय सम्बद्ध हैं तथा वर्तमान में शैक्षणिक सत्र 2019-20 में लगभग एक लाख पचास हजार विद्यार्थी अध्ययन करेंगे ।

वर्ष 2022 में हमारा देश आजादी की 75वीं वर्षगांठ मनाने जा रहा है । जनजातीय क्षेत्र में उच्च शिक्षा के स्वर्णिम अवसर उपलब्ध हो सके, इसके लिए मैं बांसवाड़ा जिले में केन्द्रीय जनजाति विश्वविद्यालय की स्थापना की मांग करता हूं ।